Toppersnotes
Unleash the topper in you

UGC-NET

हिन्दी साहित्य

NATIONAL TESTING AGENCY (NTA)

पेपर - 2 || भाग - 3

हिन्दी कविता, हिन्दी उपन्यास, हिन्दी कहानी, हिन्दी नाटक, हिन्दी निबंध, आत्मकथा एवं जीवनी तथा अन्य गद्य विधाएं

SIERRA INNOVATIONS

UGC NET

हिन्दी साहित्य

क्र.सं.	विषय–सूची	पृष्ठ संख्या
	इकाई – 5 **हिन्दी कविता : पाठ**	
1.	रेवा तट (चंद्रबरदाई)	1
2.	अमीर खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ	1
3.	विद्यापति की पदावली (संपादक–डॉ. नरेन्द्र झा)	4
4.	कबीर (संपादक–हजारीप्रसाद द्विवेदी)	5
5.	जायसी ग्रंथावली (संपादक–रामचंद्र शुक्ल)	10
6.	सुरदास भ्रमरगीत सार (संपादक–रामचंद्र शुक्ल)	16
7.	तुलसीदास (रामचरितमानस–उत्तरकाण्ड)	25
8.	बिहारी सतसई (संपादक– जगन्नाथदास रत्नाकर)	29
9.	घनानंद कवित्त (संपादक– विश्वनाथ मिश्र)	30
10.	मीरा (संपादक– विश्वनाथ त्रिपाठी)	32
11.	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'(प्रियप्रवास)	33
12.	मैथिलीशरण गुप्त	39
13.	कामायनी	49
14.	निराला	53
15.	सुमित्रानंदन पंत	56
16.	महादेवी वर्मा	57
17.	रामधारी सिंह दिनकर	58
18.	नागार्जुन	74
19.	सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	76
20.	भवानीप्रसाद मिश्र	78
21.	मुक्तिबोध	79
22.	धूमिल	85
23.	अभ्यास प्रश्न	89
	इकाई – 6 **हिन्दी उपन्यास**	
1.	देवरानी–जेठानी की कहानी – पण्डित गौरीदत्त	95
2.	परीक्षा गुरु–लाला श्रीनिवास दास	97
3.	शेखर : एक जीवनी अज्ञेय	101
4.	बाणभट्ट की आत्मकथा–हजारीप्रसाद द्विवेदी	103

5.	'मैला आँचल'—फणीश्वरनाथ 'रेणु'	105
6.	'झूठा—सच' यशपाल	107
7.	'मानस का हंस' – अमृतलाल नागर	109
8.	'तमस' – भीष्म साहनी	111
9.	'राग दरबारी – श्रीलाल शुक्ल	113
10.	'जिन्दगीनामा' – कृष्णा सोबती	115
11.	'आपका बंटी' – मन्नू भण्डारी	117
12.	'धरती धन न अपना' – जगदीश चन्द्र	118
13.	अभ्यास प्रश्न	128
	इकाई – 7 **हिन्दी कहानी**	
1.	चन्द्रदेव से मेरी बातें (बंग महिला/राजेन्द्र बाला घोष)	132
2.	एक टोकरी—भर मिट्टी (माधवराव सप्रे)	133
3.	राही (सुभद्रा कुमारी चौहान)	133
4.	ईदगाह (प्रेमचंद)	134
5.	कानों में कँगना (राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह)	136
6.	उसने कहा था (चंद्रधर शर्मा गुलेरी)	137
7.	आकाशदीप (जयशंकर प्रसाद)	138
8.	अपना अपना भाग्य (जैनेन्द्र कुमार)	138
9.	फणीश्वरनाथ रेणु	141
10.	गैंग्रीन/रोज (अज्ञेय)	142
11.	कोसी का घटवार (शेखर जोशी)	143
12.	अमृतसर आ गया है (भीष्म साहनी)	144
13.	चीफ की दावत (भीष्म साहनी)	145
14.	सिक्का बदल गया (कृष्णा सोबती)	145
15.	इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर (हरिशंकर परसाई)	146
16.	पिता (ज्ञानरंजन)	146
17.	राजा निरबंसिया (कमलेश्वर)	147
18.	परिंदे (निर्मल वर्मा)	148
19.	अभ्यास प्रश्न	150
	इकाई – 8 **हिन्दी नाटक**	
1.	नाटक एवं एकांकी	154
2.	हिन्दी नाटक और रंगमंच	158
3.	भारतेन्दु	170

4.	जयशंकर प्रसाद	173
5.	उपेन्द्रनाथ अश्क	177
6.	धर्मवीर भारती	180
7.	मोहन राकेश	182
8.	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	183
9.	हबीब तनवीर	184
10.	शंकर शेष	185
11.	लक्ष्मीनारायण मिश्र	186
12.	मन्नू भण्डारी	186
13.	अभ्यास प्रश्न	188
	इकाई – 9 **हिन्दी निबंध**	
1.	भारतेन्दु युग (1857 – 1900 ई.)	193
2.	द्विवेदी युग (1900–1920 ई.)	195
3.	शुक्ल युग (1920 – 1940 ई. तक)	196
4.	शुक्लोत्तर युग (1940 से अब तक)	198
5.	अभ्यास प्रश्न	203
	इकाई – 10 **आत्मकथा, जीवनी तथा अन्य गद्य विधाएं**	
1.	आत्मकथा	209
2.	तुलसी राम – मुर्दहिया	210
3.	मन्नू भण्डारी– एक कहानी यह भी	211
4.	हरिवंशराय बच्चन – क्या भूलूँ क्या याद करूँ	211
5.	रमणिका गुप्ता– आपहुदरी	212
6.	जीवनी	215
7.	शिवरानी देवी – प्रेमचन्द घर में	216
8.	विष्णु प्रभाकर– आवारा मसीहा	216
9.	रिपोर्ताज	218
10.	डायरी	220
11.	मुक्तिबोध– साप्ताहिक की डायरी	220
12.	रामधारी सिंह दिनकर– संस्कृति के चार अध्याय	222
13.	हरिशंकर परसाई– भोलाराम का जीव	222
14.	कृष्ण चन्दर– जामुन का पेड़	223
15.	राहुल सांकृत्यायन – मेरी तिब्बत यात्रा	223
16.	अज्ञेय – अरे यायावर रहेगा याद	224
17.	रामवृक्ष बेनीपुरी – माटी की मूरतें	225

18.	महादेवी वर्मा – ठकुरी बाबा	228
19.	अभ्यास प्रश्न	230

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

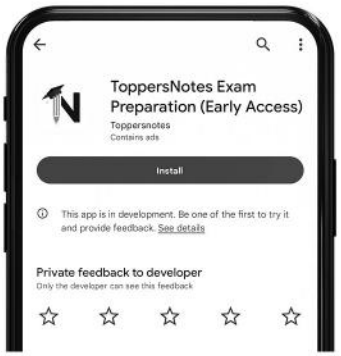

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

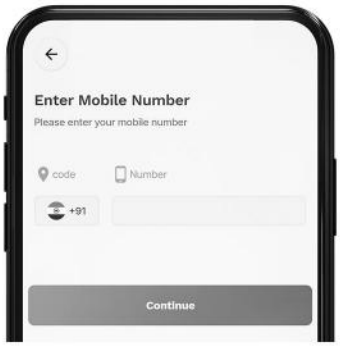

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

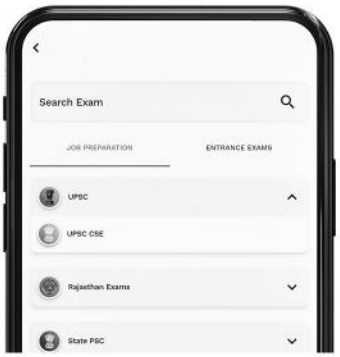

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

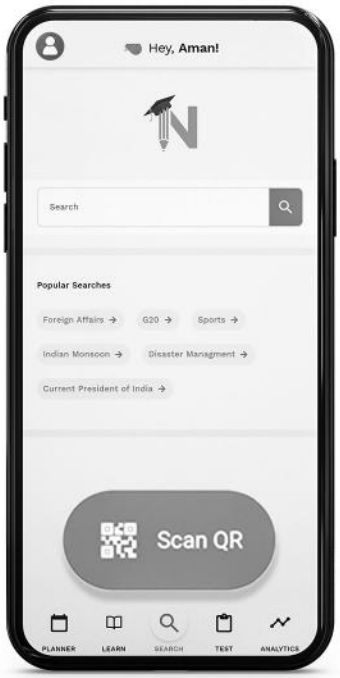

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

इकाई – 5
हिन्दी कविता : पाठ (टेक्स्ट)

रेवा तट (चंद्रबरदाई)

'रेवा तट' चंद्रबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' का सत्ताइसवाँ समय (सर्ग) है। इस सर्ग में पृथ्वीराज चौहान के रेवा तट (नर्मदा) के समीप वन में शिकार खेलने जाने तथा वहाँ शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी से युद्ध का विस्तुत वर्णन है। 'रेवा तट' पर हुए युद्ध में पृथ्वीराज की विजय होती है, फलस्वरूप मुहम्मद गौरी को बंदी बना लिया जाता है। 'रेवा तट' का मुख्य विषय पृथ्वीराज और गौरी का युद्ध है तथा इसका प्रधान रस वीर रस है। परिचय हेतु एक उद्धरण दिया जा रहा है–

- देवगिरि जीते सुभट, आयौ जामंड राइ।
  जय जय नृप कीरति सकल, कही कव्विजन गाइ।।
  मिलट राज प्रथिराज सों कही राव चामंड।
  रेवातट जो मन करौ, (तौ) वन अपुब्ब गज झुंड।।

अमीर खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ

मुकरियाँ

- लिपट लिपट के वा के सोई
  छाती से छाती लगा के रोई
  दाँत से दाँत बजे तो ताड़ा
  ऐ सखि साजन ? ना सखि जाड़ा!
- रात समय वह मेरे आवे
  भोर भये वह घर उठि जावे
  यह अचरज है सबसे न्यारा
  ऐ सखि साजन ? ना सखि तारा!

बूझ–अनबूझ पहेलियाँ

- गोश्त क्यों न खाया ?
  डोम क्यों न गया ?
  उत्तर–गला न था
- जूता पहना नहीं
  समोसा खाया नहीं
  उत्तर–तला न था
- अनार क्यों न चखा ?
  वज़ीर क्यों न रखा ?
  उत्तर – दाना न था
  (अनार का दाना और दाना बुद्धिमान)
- सौदागर चे मे बायद ? (सौदागर को क्या चाहिये)
  बूचे (बहरे) को क्या चाहिये ?
  उत्तर– (दो कान भी दुकान भी)

- तिश्नारा चे मे बायद ? (प्यासे को क्या चाहिये)
  मिलाप को क्या चाहिये
  उत्तर– चाह (कुआँ भी और प्यार भी)
- शिकार ब चे मे बायद करद ? (शिकार किस चीज से करना चाहिये)
  कुव्वते मग्ज को क्या चाहिये ? (दिमागी ताकत को बढ़ाने के लिये क्या चाहिये)
  उत्तर– बा–दाम (जाल के साथ) और बादाम
- रोटी जली क्यों ? घोड़ा अड़ा क्यों ? पान सड़ा क्यों ?
  उत्तर– फेरा न था
- पंडित प्यासा क्यों ? गधा उदास क्यों ?
  उत्तर– लोटा न था
- उज्जवल बरन अधीन तन, एक चित्त दो ध्यान।
  देखत मैं तो साधु है, पर निपट पाप की खान।।
  उत्तर– बगुला (पक्षी)
- एक नारी के हैं दो बालक, दोनों एकहि रंग।
  एक फिर एक ठाढ़ा रहे, फिर भी दोनों संग।
  उत्तर– चक्की।
- आगे–आगे बहिना आई, पीछे–पीछे भइया।
  दाँत निकाले बाबा आए, बुरका ओढ़े मइया।।
  उत्तर–भुट्टा
- चार अंगुल का पेड़, सवा मन का फता।
  फल लागे अलग अलग, पक जाए इकट्ठा।।
  उत्तर– कुम्हार की चाक
- अचरज बंगला एक बनाया, बाँस न बल्ला बंधन धने।
  ऊपर नींव तने घर छाया, कहे खुसरो घर कैसे बने।।
  उत्तर– बयाँ पंछी का घोंसला
- माटी रौदूँ चक धरूँ, फेरूँ बारम्बर।
  चातुर हो तो जान ले मेरी जात गँवार।।
  उत्तर– कुम्हार
- गोरी सुंदर पालती, केहर काले रंग।
  ग्यारह देवर छोड़ कर चली जेठ के संग।।
  उत्तर– सुपारी
- बाल नुचे कपड़े फटे मोती लिये उतार।
  यह बिपदा कैसी बनी जो नंगी कर दई नार।।
  उत्तर–भुट्टा (छल्ली)
- एक नार कुएँ में रहे,
  वाका नीर खेत में बहे।
  जो कोई वाके नीर को चाखे,
  फिर जीवन की आस न राखे।।
  उत्तर– तलवार

- एक जानवर रंग रंगीला,
  बिना माने वह रोवे।
  उस के सिर पर तीन तिलाके,
  बिन बताए सोवे।।
  उत्तर–मोर
- चाम मांस वाके नहीं नेक,
  हाड़ मांस में वाके छेद।
  मोहि अचंभो आवत ऐसे,
  वामें जीव बसत है कैसे।।
  उत्तर–पिंजड़ा
- स्याम बरन की है एक नारी,
  माथे ऊपर लागै प्यारी।
  जो मानस इस अरथ को खोले,
  कुत्ते की वह बोली बोले।।
  उत्तर– भौं (भौएँ आँख के ऊपर होती हैं।)
- एक गुनी ने यह गुन कीना,
  हरियल पिंजरे में दे दीना।
  देखा जादूगर का हाल,
  डाले हरा निकाले लाल।
  उत्तर– पान
- एक थाल मोतियों से भरा,
  सबके सर पर औंधा धरा।
  चरों ओर वह थाली फिरे,
  मोती उससे एक न गिरे।
  उत्तर–आसमान
- गोल मटोल और छोटा–मोटा,
  हर दम वह तो जमीं पर लोटा।
  खुसरो कहे नहीं है झूठा,
  जे न बूझे अकिल का खोटा।।
  उत्तर–लोटा
- श्याम बरन और दाँत अनेक,
  लचकत जैसे नारी।
  दोनों हाथ से खुसरो खींचे,
  और कहे तु आ री।।
  उत्तर– आरी
- हाड़ की देही उज रंग,
  लिपटा रहे नारी के संग।
  चोरी की ना खून किया,
  वाका सर क्यों काट लिया
  उत्तर– नाखून

- बाला था जब सबको भाया,
  बड़ा हुआ कुछ काम न आया।
  खुसरो कह दिया उसका नाव,
  अर्थ करो नहीं छोड़ज्ञै गाँव।।
  उत्तर– दिया
- नारी से तू नर भई और श्याम बरन भई सोय।
  गली–गली कूकत फिरे कोइलो–कोइलो लोय।।
  उत्तर– कोयल
- एक नार तरवर से उतरी,
  सर पर वाके पाँव।
  ऐसी नार कुनार को,
  मैं ना देखन जाँव।।
  उत्तर– मैना
- सावन भादों बहुत चलत है,
  माघ पूस में थारी।
  अमीर खुसरों यूँ कहें,
  तु बूझ पहेली मोरी।।
- तरवर से इक तिरिया उतरी उसने बहुत रिझाया
  बाप का उससे नाम जो पूछा आधा नाम बताया
  आधा नाम पिता पर प्यारा बूझ पहेली मोरी
  अमीर खुसरो यूँ कहें अपना नाम नबोली
  उत्तर– निम्बोली

विद्यापति की पदावली (संपादक–डॉ. नरन्द झा)

वंदन

- नन्दक नन्दक कदम्बक तक–तर।
  घिरे घिरे मुरलि बजाव।।
  समय संकेत–निकेतल बइसल।
  वेरि वेरि बोति पठाव।।
  सामरि, तोरा लागि।
  अनुखन विकल मुरारि।।
  जमुनाक तिर उपवन उदवेगल।
  फिरि फिरि ततहि निहारि।।
  गोरस बेचए अवइत जाइत।
  जनि जनि पुछ बनमारि।।
  तोहे मतिमान, सुमति, मधुसूदन।
  वचन सुनह किछु मोरा।।
  भनइ विद्यापति सुन बरजौवति।
  बन्दह नन्द–किसोरा।।

राधा की वंदना

- देख देख राधा रूप अपार।
  अपुरूब के बिहि आनि मिलाओल
  खिति–तल लावनि–सार
  अगहि अंग अनंग मुरछायत ।
  हेरए पड़ए अथीर।।
  मनमथ कोटि–मथन करु जे जन।
  से हेरि महि–मधि गीर।।
- सैसव जौवन दुहु मिलि गेल।
  स्रवन क पथ दुहु लोचन लेल।।
  वचन क चातुरि लहु–लहु हास।
  धरनिये चाँद कएल परगास।।
  मुकुर लई अब करई सिंगार।
  सखि कुछइ कइसे सुरत–विहार।।
  निरजन उरज हेरइ कत वेरि।
- हसइ से अपन पयोध हेरि।।
  पहिल वदरि–सम पुन नवरंग।
  दिन–दिन अनंग अगोरल अंग।।
  माधव पेखल अपुरुब वाला।
  सैसव जौवन दुहु एक भेला।।
  विद्यापति कह तह अगेआनि।
  दुहु एक जोग हइ के कह सयानि।।

कबीर (संपादक–हजारीप्रसाद द्विवेदी)

- लोका मति के भोरा रे।
  जो कासी तन तजै कबीरा,
  तौ रामहिं कहा निहोरा रे।
  तब हम वैसे अब हम ऐसे,
  इहै जनम का लाहा रे।
  रा–भगति–परि जाकौ हित चित
  ताकौ अचिरज काहा रे।
  गुरु–परसाद साध की संगति,
  जन जीतें जाइ जुलाहा रे।
  कहै कबीर सुनहु रे संतो,
  भ्रंमि परै जिनि कोई रे।
  जस कासी तस मगहर ऊसर,
  हिरदै राम सति होई रे।
- पूजा–सेवा–नम–व्रत, गुड़ियन का–सा खेल।
  जब लग पिउ परसै नहीं, तब लग संसय मेला।।
  जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान।

मेल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान।।
हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहन दुलीचा डारि।।
स्वान–रूप संसार है, भूँकन दे झक मारि।।

- मेरा–मेरा मनुआँ कैसे इक होई रे।
  मैं कहता हो आँखिन देखी, तू कहता कागद की देखी।
  मैं कहता सुरझावनहारी, तु राख्यौ उरझाई रे।
  मैं कहता तू जागत रहियो, तू जाता है सोही रे।
  मैं कहता निमौहि रहियो, तू जाता मोही रे।
  जुगन जगन समुझावत हारा, कही न मानत कोई रे।
  तु तो रंडी फिरै बिहंडी, सब धन डारे खोई रे।
  सतगुरु धारा निर्मल बाहै, वामैं काया धोई रे।
  कहत कबीर सुनो भाई साधो, तब ही वैसा होई रे।
- मोरी चुनरी में परि गयो दाग पिया।
  पाँच वत्त की बनी चुनरिया, सोरहसै बँद लागे जिया।
  यह चुनरी मोरे मैकेतें आई, ससुरे में मनुवा खोय दिया।
  मलि मलि धाई दाग न छूटे, ज्ञान को साबुन लाय पिया।
  कहैं कबीर दाग कब छुटि है, जब साहब अपनाय लिया।
- तेरा जन एक आध है कोई।
  काम–क्रोध अरु लोभ विवर्जित, हरिपद, चीन्हैं सोई।।
  राजस–तामस–सातिग तीन्यूँ, ये सब तेरी माया।
  चौथे पद कौं जे जन चीन्हैं, तिनहि परम पद पाया।
- असतुति–आसा छाँड़ै, तजै मान अभिमाना।
  लोहा–कंचन समि करि देखै, ते मूरति भगवाना।।
  च्यतै तो माधौ च्यंतामणि हरिपद रमैं उदासा।
  त्रिसनां अरु अभिमान रहित है कहै कबीर सो दासा।।
- साधो, देखो जग बौराना।
  साँची कहौ तौ मारन धावै झूँठे जग पतियाना।
  हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना।
  आपस मैं दोऊ लड़े मरतु हैं मरम कोई नहिं जाना।
- बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्रात करैं असनाना।
  आतम–छोड़ि पशानै पूजैं तिनका थोथा ज्ञाना।
  आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना।
  पीपर–पाथर पूजन लागे तीरथ–बर्त भुलाना।
  माला पहिरे टोती पहिरे छाप–तिलक अनुमाना।
  साखी सब्दै गावत भूते आतम खबर न जाना।
  घर–घर मंत्र जो देन फिरत हैं माया के अभिमाना।
  गुरुवा सहित शिष्य सब बूड़े अंतकाल पछिताना।
  बहुतक देखे पीर–औतिया पढ़ै किताब–कुराना।
  करै मुरीद कबर बतलावैं उनहूँ खुदा न जाना।

- हिन्दू की दया मेहर तुरकन की दोनों घर से भागी।
  वह करै जिबह वाँ झटका मारे आग दोऊ घर लागी।
  या बिधि हँसत चलत हैं हमको आप कहावैं स्याना।
  कहै कबीर सुनों भाई साधो, इनमें कौन दिवाना।
- चली मैं खोज में पिया की। मिटी नहिं सोच यह जिय की।।
  रहे नित पास की मेरे। न पाऊँ यार को हेरे।।
  बिकल चहूँ ओर को धाऊँ। तबहूँ नहिं कंत को पाऊँ।।
  धरों केहि भाँति सो धीरा। गयौ गिर हाथ से हीरा।।
  कटी जब नैन की झाईं। लक्ष्यौं तब गगन में साईं।।
  कबीर शब्द कहि त्रासा। नयन में यार को बासा।।
- तलफै बिन बालम मोर जिया।
  दिन नहिं चैन रात नहिं निंदया,
  तलफ तलफ के भोर किया।।
  तन मन मोर रहँट–अस डोलै,
  सुन्न सेज पर जनम छिया।
  नैन थकित भये पंथ न सूझै,
  साँईं बेदरदी सुध न लिया।।
  कहत कबीर सुनो भाई साधो,
  हरो पीर दुःख जोर किया।।
- नैना अंतरि आव तूँ, ज्यों हौं नैन झँपेऊँ।
  ना हौं देखौं और कूँ, नाँ तुझ देखन देऊँ।। 1।।
  कबीर रेख सिंदूर की काजल दिया न जाइ।
  नैनूँ रमइया रमि रह्या, दूजा कहाँ समाइ।। 2।।
  मन परतीति न प्रेम–रस, नाँ इस तन में ढंग।
  क्या जाणौं उस पीवसूँ, कैसैं रहसी रंग।। 3।।
- नैनों की करि कोठरी, पुतरी पलँग बिछाय।
  पलकों की चिक डारिकै, पिया को लिया रिझाय।।1।।
  प्रीतम को पतिया लिखूँ, जो कहूँ होय विदेस।
  तन में मन में नैन में, ताकौं कहा सँदेस ।। 2।।
- अँखियाँ तो झाईं परी, पंथ निहारि निहारि।
  जीभड़ियाँ छाला पड्या नाम पुकारि पुकारि।। 1।।
  बिरह कमंडल कर लिये, बैरागी दो नैन।
  माँगै दरस मधूकरी, छके रहैं दिन–रैन।। 2।।
  सब रंग ताँत रबाब तन, बिरह बजाबै नित्त।
  और न कोई सुनि सकै, कै साईं कै चित्त।। 3।।
- कैसे दिन कटिहैं जतन बताये जइयो।
  एहि पर गंगा ओहि पर जमुना,
  बिचवाँ मड़इया हमकाँ छवाये जइयो।
  अँचरा फारिके कागज़ बनाइन,
  अपनी सुरतिया हियरे, लिखाये जइयो।

कहत कबीर सुनो भाई साधो,
बहियाँ पकरिकें रहिया बताये जइयो।

- भींजै चुनरिया प्रेम–रस बूँदन।
  आरत साज के चली है सुहागिन पिया अपने को ढूँढ़न।
  काहे की तौरी बनी चुनरिया काहे को लगे चारों फूँदन।
  पाँच तत्त की बनी चुनरिया नाम के लागे फूँदन।
  चढ़िगे महल खुल गई रे किबरिया दास कबीर लागे झूलन।।
- मैं अपने साहब संग चली।
  हाथ में नरियल मुख में बीड़ा, मोतियन माँग भरी।
  लिल्ली घोड़ी जरद बद्देड़ी, तापै चढ़ि के चली।
  नदी किनारे सतगुरु भेंटे, तुरत जनम सुधरी।
  कहै कबीर सुनो भाई साधो, दोउ कुल तारि चली।
- गुरु मोहिं घुँटिया अजर पियाई।
  गुरु मोहिं घुँटिया पियाई, भई सुचित मेटी दुचिताई।
  नाम–औषधी अधर–कटोरी, पियत अधाय कुमति गई मोरी,
  ब्रह्मा–बिस्नु पिये नहीं पाये, खोजत संभू जन्म गँवाये।
  सुरत नितर करि पियै जौ कोई, कहैं कबीर अमर होय सोई।।
- कबीर भाटी कलाल की, बहुतक बैठे आइ।
  सिर सौंपे सोई पिवै, नहीं तो पिया न जाइ।। 1।।
  हरि–रस पीया जाणिये, जे कबहूँ न जाइ खुमार।
  मैमंता घूमत रहे, नाहीं तन की सार ।। 2।।
  सबै रसायण मैं किया, हरि–सा और न कोइ।
  तिल इक घट मैं संचरै, तो सब कंचन होइ ।। 3 ।।
- पीछे लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।
  आगे थैं सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि।। 1।।
  दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
  पूरा किया बिसाहुणां, बहुरि न आवौं हट्ट।। 2।।
  कबीर गुरु गरवा मिल्या, रलि गया आटे लूँण।
  जाति–पाँति–कुल सब मिटै, नाँव धरौगे कौंण।। 3।।
  सतगुरु हमसूँ रीझि करि एक कह्या परसंग।
  बरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग।। 4।।
- मेरी अँखियाँ जांन सुजांन भई।
  देवर ननद सुसर संग तजि करि, हरि पीव तहाँ गई।।
  बालपनैं के करम हमारे, काटे जानि दई।
  बाँह पकरि करि किरपा कीन्हीं, आप समींप लई।।
  पानी की बूँदथे जिनि प्यँड साज्या, ता संगि अधिक रई।।
  दास कबीर पल प्रेम न घटई, दिन–दिन प्रीति नई।।
- मोरे लगि गए बान सुरंगी हो।
  धन सतगुरु उपदेश दियो है, होइ गयो चित्त भिरंगी हो।

ध्यान पुरुष की बनी है तिरिया, घायल पाँचों संगी हो।।
घायल की गति घायल जाने, की जानै जात पतंगी हो।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, निसि दिन प्रेम उमंगी हो।।

- पिया मेरा जागे मैं कैसे सोई री।
  पाँच सखी मेरे संग की सहेली,
  उन रँग रँगी पिया रंग न मिली री।।
  सास सयानी ननद देवरानी,
  उन डर डरी पिय सार न जानी री।
  द्वादस ऊपर सेज बिछानी,
  चढ़ न सकौं मारी लाजल जानी री।।
  रात दिवस मोहिं कूका मारे,
  मैं न सुनी रचि नहि संग जानी री।
  कहैं कबीर सुनु सखी सयानी,
  बिन सतगुरु पिया मिले न मिलानी री।।
- बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
  जिय तरसै तुझ मिलन कूँ, मनि नाहीं बिसराम।। 1।।
  बिरहिनि ऊठै भी पड़े, दरसन कारनि राम।
  मूवा पीछे देहुगे, सो दरसन केहि काम ।। 2।।
  मूवा पीछे जिनि मिले, कहै कबीरा राम।
  पाथर–घाटा–लोह, सब पारस कौणैं काम ।। 3।।
  बासरि सुख ना रैंणि सुख, ना सुख सुपिनै माहिं।
  कबीर बिछुट्या रामसूँ, ना सुख धूप न छाँहि।। 4।।
- परबति परबति में फिर्‌या, नैन गँवाए रोइ।
  सो बूटी पाऊँ नहीं, जातैं जीवन होई।। 1।।
  नैन हमारे जलि गए, छिन छिन लोड़ै तुज्झ।
  नाँ तूँ मिलै न मैं खुसी ऐसी बेदन मुज्झ।। 2।।
  सुख्या सब संसार है खाये अरु सावै।
  दुखिया दास कबीर है जागे अरु रोवै।। 3।।
- कबिरा प्याला प्रेम का, अंतर दिया लगाय।
  रोम रोम में रमि रह्या, और अमल क्या खाय।। 1।।
  राता–माता नाम का, पीया प्रेम अघाय।
  मतवाला दीदार का, माँगै मुक्ति बलाय।। 2।।
- ऐ कबीर, तैं उतरि रहु, संबल परो न साथ।
  संबल घटे न पगु थकें, जीव बिराने हाथ।। 1।।
  कबीर का घर सिखर पर, जहाँ सिलहली गैल।
  पाँव न टिकै पिपीलिका, खलकन लादे बैल।। 2।।
- काल खड़ा सिर ऊपरे, जागु बिराने मीत।
  जाका घर है गैल में, सो कस सो निचीत।

- नैहर मैं दाग लगाय आय चुनरी।
  ऊ रँगरेजवा कै मरम न जानै,
  नहिं मिलै धोबिया कौन करै उजरी।
  तन कै कूँडी ज्ञान कै सौंदन
  साबुन महँग बिचाय या नगरी।
  पहिरि–ओढ़िके चली ससुररिया,
  गौवाँ के लोग कहैं बड़ी फुहरी।
  कहैं कबीर सुनो भाई साधो,
  बिना सतगुरु कबहूँ नहिं सुधरी।
- अपनपौ आप ही बिसरो।
  जैसे सोनहा काँच मंदिर मैं भरमत भूँकि मरो।
  जो केहरि बपु निरखि कूल–जल प्रतिमा देखि परो।
  ऐसेहिं मदगज फटिक शिला पर दसननि आनि अरो।
  मरकट मुठी स्वाद ना बिसरै घर घर नटत फिरो।
  कह कबीर ललनी कै सुवना तोहि काने पकरो।

जायसी ग्रंथावली (संपादक–रामचंद्र शुक्ल)

- आचार्य शुक्ल द्वारा संपादिक पद्मावत (जायसी ग्रंथावली) का 30 वाँ खंड नागमती–वियोग खंड है।
- पद्मावत में श्रृंगार का वियोग पक्ष तीन चरित्रों के माध्यम से दिखाया गया है – रत्नसेन, पद्मावती तथा नागमती।
- जायसी ने नागमती के विरह का विस्तृत वर्णन किया है जो बेहद रमणीय, सुंदर व मार्मिक है। नागमती रत्नसेन की पत्नी है जो रत्नसेन के पद्मावती की खोज में सिंहलद्वीप जाने पर एक वर्ष तक पति से अलग रहने के कारण विरह वेदना भोगती है। सच यह है कि जायसी का भावुक मन नागमती के वियोग में ही अधिक रमा है। इस संबंध में शुक्ल जी की स्पष्ट धारणा है कि – ''नागमती का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य में एक अद्वितीय वस्तु है''।
- नागमती के विरह–वर्णन की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह मानी गई है कि इसमें नागमती को रानी के रुप में नहीं, एक साधारण विरहदग्ध नारी के रुप में वर्णित किया गया है। शुक्ल जी कहते हैं–''अपनी भावुकता का बड़ा भारी परिचय जायसी ने इस बात में दिया है कि रानी नागमती विरहदशा में अपना रानीपन बिल्कुल भूल जाती है और अपने को केवल साधारण नारी के रुप में देखती है। इसी सामान्य स्वाभाविक वृत्ति के बल पर उसके विरहवाक्य छोटे–बड़े सबके हदय को समान रुप में स्पर्श करते हैं।''
- नागमती के विरह– वर्णन की एक और प्रमुख विशेषता यह है कि उसका विरह केवल वैयक्तिक संयोग सुख की प्रेरण पर आधारित नहीं है बल्कि जीवन के लोक–व्यवहारों तथा कर्त्तव्यों से जुड़ा हुआ है। नागमती मध्यकाल की एक हिन्दू नारी है जिसके जीवन की सारी सार्थकता उसके पति में केंद्रित है।
- नागमती के वियोग में इस गार्हस्थिक चेतना ने अद्भुत मार्मिकता का समावेश कर दिया है।
- विरह–वर्णन में फारसी मसनवियों की शैली प्रायः ऊहात्मक हो जाती है। ऊहात्मकता का अर्थ है–विरह का ऐसा अतिषयोक्तिपूर्ण वर्णन जो असामान्य होने के साथ–साथ कहीं–कहीं कुरुचिपूर्ण या चुगुप्सापूर्ण होने लगे। नागमती के विरह वर्णन में जायसी ने ऊहात्मकता का सहारा तो लिया है किन्तु उसे कहीं भी मज़ाक का विषय नहीं बनने दिया है।

पद्मावत (नागमती वियोग खंड से)

- नागमती चितउर पथ हेरा। पिउ जो गए पुनि कीन्ह न फेरा।।
  नागर काहु नारि बस परा। तेई मोहि, पिय मौ सों हरा।।
  सुआ काल होइ लेइगा पीऊ। पिउ नहिं जात, जात बरु जीऊ।।
  भएउ नरायन बावँन करा। राज करत राजा बलि छरा।।
  करन पास लीन्हेउ के छंदू। बिप्र रूप धरि झिलमिल इंदू।।
  मानत भोग गोतिचँद भोगी। लेइ अपसवा जलंधर जोगी।।
  लेइगा कृस्नहि गरुडऋ अलोपी। कठिन बिछोह, जियहिं किमि गोति।।
  सारस जोरी कौन हरि, मारि बियाधा लीन्ह ?
  झुरि झुरि पींजर हौं भई, बिरह काल माहि दीन्हा ।। 1।।
  - भारतीय पौराणिक कथाओं का प्रयोग
- पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा निति बोलै 'पिउ पीऊ'।।
  अधिक काम दाधै सो रामा। हरि लेइ सुवा गएउ पिउ नामा।।
  हिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीज, भीजि गई चोली।।
  सूखा हिया, हार भा भारी। हरि हरि प्रान तजहिं सब नारी।।
  खन एक आव पेट महँ! सांसा। खनहिं जाइ जिउ, होइ निरासा।।
  पवन डोलावहिं सीचहिं चोला। पहर एक समुझहिं मुख बोला।
  प्रान प्यान होत को राखा ? को सुनाव पीतम के भाखा ?
  आहि जो मारै बिरह कै, आणि उठै तेहि लागि।
  हंस जो रहा सरीर महँ, पाँख जार, गा भागि।। 2।।
  - अलंकार–रुपक, अतिशयोक्ति
- पाट महादेइ! थ्हये ना हारु। समुझि जीउ, जित चेतु सँभारु।।
  भौर कँवर सँग होइ मेरावा। सँवरि नेह मालति पहँ आवा।।
  पपिहै स्वाती सौं जस प्रीती। टेकु पियास, बाँधु मन थीती।।
  धरतिहि जैस गगन सौं नहा। पलटि आव बरशा ऋतु मेहा।।
  पुनि बसंत ऋतु आव नवेली। सो रस, सो मधुकर, सो बेली।।
  जिनी अस जीव करसि तू बारी। यह तरिवत पुनि उठिहि सँवारी।।
  दिन दस बिनु जल सूखि बिधंसा। पुनि सोई सरवर, सोई हंसा।।
  मिलहिं जो बिछुरे साजन, अंकम भेंटि गहंत।
  तपनि मृगसिरा जे सहैं, ते अद्रा पतुहंत।। 3।।
  - अलंकार–उपमा व दृष्टांत
- चढ़ा असाढ़, गगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।।
  धूम, साम, धौरे घन घाए। सेत धजा बग–पाँति देखिए।।
  खड़ग बीचु चमकै चहुँ औरा। बूंद–बान बरसहिं घन घोरा।।
  ओनई घटा आइ चहुँ फेरी। कंत! उबारु मदन हौं घेरी।।
  दादुर मोर कोकिला, पीऊ। गिरै बीचु, घट रहै न जीऊ।।
  पुष्य नखत सिर ऊपर आवा। हों बिनु नाह, मँदिर को छावा ?।।
  अद्रा लाग लागि भुइँ लेई। मोहिं बिनु पिउ को आदर देई ?।।
  जिन्ह घर कंता ते सुखी, तिन्ह गारौ औ गर्ब।

कंत पियारा बाहिरै, हम सुख भूला सर्ब।। 4।।

- बारहमासा वर्णन – आषाढ़
- अलंकार – उत्प्रेक्षा

- सावन बरस मेह अति पानी। भरनि परी, हौं बिरह झुरानी।।
  लाग पुनरबसु पीउ न देखा। भाइ बाउरि, कहँ कंत सरेखा ?।।
  रकत कै आँसु परहिं भुहँ टूटी। रेंगि चलीं जस बीरबहूटी।।
  सखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला। हरियरि भूमि, कुसुंभी चोला।।
  हिय हिंडोल अस डोलै मौरा। बिरह झुलाइ देइ झकझोरा।।
  बाट असूझ अथाह गँभीरी। जिउ बाउर, भा फिरै भँभीरी।।
  जग जल बूड़ लहाँ लगि ताकी। मोरि नाव खेवक बिनु थाकी।।
  परबत समुद अगम बिच, बीहड़ वन बनढाँख।
  किमी के भेंटौं कंता तुम्ह ? ना मोहिं पाँव न पाँख ।। 5।।
  - बारहमासा वर्णन : सावन (श्रावन)
  - अलंकार–अत्प्रेक्षा ?

- भा भादौं दुभर अति भारी। कैसे भरौं रैनि अँधियारी।।
  मँदिर सून पिउ अनतै बसा। सेज नागिनी फिरि डसा।।
  रहौं अकेलि गहे इक पाटी। नैन पसारि मरों हिया फाटी।।
  चमक बीजु, घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।।
  बरसै मघा झकोरि झकोरी। मौरि दुइ नैन चुवैं जस ओरी।
  धनि सूखै भरे भादौं माहाँ। अबहुँ न आएन्हि सींचेन्हि नाहा।।
  पुरबा लाग भूमि जल पूरी। आक जवास भाई तस झूरी।।
  थल जल भरे अपूर सब, धरति गगन मिलि एक।
  धनि जोबन अवगाह महँ, दे बूड़त, पिउ! टेक ।। 6।।
  - बरहमासा वर्णन – भादो (भाद्रपद)

- लाग कुवार, नीर जग घटा। अबहूँ आउ कंत! तन लटा।।
  तोहि देखे, पिउ! पलुहै कया। उतरा चीत्त बहुरि करु मया।।
  चित्रा मित्र मीन कर आवा। पपिहा पीउ पुकारत पावा।।
  उआ अगस्त, हस्ति–घन गाजा। तुश्रय पलानि चढ़े रन राजा।।
  स्वाति–बूँद चातक मुख परे। समुद सीप मोती सब भरे।।
  स्रवर सँवरि हंस चलि आए। सारस कुरलहिं, खजन दिखाए।
  भा परगास, काँस बन फूले। कंत न फिरे, बिदेसहि–भूले।।
  बिरह हस्ति तन सालै, धाय करै चित चूर।
  बेगि आइ, पिउ! बाहहु, गाजहु होइ सदूर ।। 7।।
  - बारहमासा वर्णन – क्वार (आश्विन)
  - अलंकार – विरोधाभास, उत्प्रेक्षा, रूपक

- कातिक सरद–चंद उजियारी। जग सीतल, हौं बिरहै जारी।।
  चौदह करा चाँद परगासा। जनहुँ जरै सब धरति अकासा।।
  तनम न सेज करै अगिदाहू। सब कहँ चंद, भएउ मोहि राहू।।
  चहूँ खंड लागै अँधियारा। जौं घर जाही कंत पियारा।।

अबहूँ निठुर! आउ एहि बारा। परब देवारी होइ संसारा।।
सखि झूमक गावैं अँग मोरी। हौं झुरावँ, बिछुरी मोरि जोरी।।
जेहि घर पिउ सो मनोरथ पूरा। मो कहँ बिरह, सवति दुःख दूजा।।
सखि मानैं कंत बिनु, रही छार सिर मेलि।। 8।।

- बारहमासा वर्णन – कार्तिक
- अलंकार – विरोधाभास, उत्प्रेक्षा, रुपक
- परब, देवरी–ठेठ अवधी के शब्द
- छार सिर मेलि – मुहावरा है

- अगहन दिवस घटा, निसि बाढ़ी। दूभर रैनि, जाइ किमी गाढ़ी ?।।
अब धनि बिरह दिवस भा राती। जरौं बिरह जस दीपक–बाती।।
काँपै हिया जनावै सीऊ। तौ पै जाइ होइ सँग पीऊ।।
घर घर चीर रचे सब काहू। मोर रूप–रँग लेइगा नाहू।।
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूँ फिरै, फिरै रँग सोई।।
बज्र–अगिनि बरहिनि हिय जारा। सुलुगि सुलुगि दगधै होइ छारा।।
यह दुःख दगध न जानै कंतू। जोबन जनम करै भसमंतू।।
पिउ सौं कहेउ सँदेसड़ा हे भौरा! हे काग!
सो धनि बिरहै जरि मुई तेहि क धुवाँ हमह लाग।। 9।।
  - बारहमासा वर्णन – अगहन (मार्गशीर्ष)
  - अलंकार–उत्प्रेक्षा, उपमा, अतिशयोक्ति, विरोधाभास

- पूस जाड़ थर थर तन काँपा। सुरुज जाइ लंका–दिसि चाँपा।
बिरह बाढ़ दारुन भा सीऊ। कँपि कँपि मरौं, लेइ हरि जीऊ।।
कंत कहाँ, लागौं औहि हियरे। पंथ अपार, सूझ नहिं नियरे।।
सौंर सपेती आवै जूड़ी। जानहु सेज हिवंचल बूड़ी।।
चकई अकेलि साथ नहिं सखी। कैसे जियै बिछोही पखी।।
बिरह सचान भएउ तन जाड़ा। जियत खाइ औ मुए न छाँड़ा।।
रकतढुरा माँसू गरा, हाड़ भएउ सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई, पीउ समेटहि पंख ।। 10।।
  - बारहमासा वर्णन – पूस (पौष)
  - अलंकार–उत्प्रेक्षा, रूपक, पुनरुक्ति प्रकाश

- लागेउ माघ परै अब पाला। बिरहा काल भएउ जड़काला।।
पहल पहल तन रूई साँपै। हहरि अधिकौ हिय काँपै।।
आइ सूर होइ तपु, रे नाहा। तोहि बिनु जाड़ न छूटै माहा।।
एहि माँह उपजै रसमूलू। तूँ सौ भौंर मोर जोवन फूलू।।
नैन चुवहिं जस महवट नीरु। तोहि बिनु अंग लाग सर चीरू।।
टप टप बूँद परहिं जस ओला। बिरह पवन होइ मारै झोला।।
केहि क सिंगार, को पहिरु पटोर ?। गीउ न हार, रही होइ डोरा।।
तुम बिनु काँपै धनि हिया, तन तिनउर भा डोल।
तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उड़ावा झोल।। 11।।
  - बारहमासा वर्णन – माघ

- फागुन पवन झकोरा बहा। जौगुन सीउस जाइ नहिं सहा।।
  तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा।।
  तरिवरझरहिं, झरहिं बन ढाखा। भई ओनंत फूलि फरि साखा।।
  करहिं बनसपति हिये हुलासू। मो कहँ भा जग दून उदासू।।
  फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहिं तन लाइ दीन्हि जस होरी।।
  जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत मरत मोहिं रोष न आवा।।
  राति दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।
  यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'।
  मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव ।। 12।।
  - बारहमासा वर्णन – फागुन (फाल्गुन)
  - चाँचरि – फागुन में गाए जाने वाला श्रृंगारिक लोक नृत्य–गीत
- चैत बसंता होइ धमारी। मोहिं लेखे संसार उजारी।।
  पंचम बिरह पंच सर मारै। रकत रोइ सगरौं बन ढारै।।
  बूड़ि उठे सब तरिवर–पाता। भीजि मजीठ, टेसु बन राता।।
  बौरे आम फरै अब लागै। अबहुँ आउ घर, कंत सभागे।।
  सहस भाव फूलीं बनसपती। मधुकर घूमहिं सँवरि मालती।।
  मोकहँ फूल भए सब काँटे। दिस्टि परत जस लागहिं चाँटे।।
  फरि जोबन भए नारँग साखा। सुआ बिरह अब जाइ न राखा।।
  घिरिनि परेवा होइ पिउ! आउ बेगि परु टूटि।
  नारि पराए हाथ है, तोहि बिनु पाव न टुटि।। 13।।
  - बारहमासा वर्णन – चैत्र
  - 'मोहिं लेखे संसार उजारी', 'जस लागहिं चाँटे' मुहावरे हैं
  - अलंकार–उपमा व रूपक
- भा बैसाख तपनि अति लागी। चोआ चीर चँदन भा आगी।।
  सूरुज जरत हिवंचल ताका। बिरह–बजागि सौंह रथ हाँका।।
  जरत बजागिनि करु, पिउ! छाहाँ। आइ बुझाठ, अँगारन्ह माहाँ।।
  तोहि इरसन होइ सीतल नारी। आइ ओगि तें करु फुलवारी।।
  लागिउँ जरै जरै, जस भारू। फिरि भूँजेसि भूँजैसि, तजिउँ न बारू।।
  सरवर हिया घटत निति जाई। टूक टूक होइ कै बिहराई।।
  बिहरत हिया करहु, पिउ टेका। दीठि–दवँगरा मेरवहु एका।।
  कँवल जो बिगसा मानसर, बिनु जल गएउ सुखाइ।
  अबहुँ बेलि फिरि पलुहै, जौ पिउ सींचै आइ।। 14।।
  - बारहमासा वर्णन – वैशाख
  - सरवर हिया, दीठि दवँगरा–रूपक अलंकार
- जेठ जरै जग, चलै लुवारा। उठहिं बवंडर परहिं अँगारा।।
  बिरह गजि हनुवँत होइ जागा। लंका–दाह करै तनु लागा।।
  चारिहु पवन झकोरै आगी। लंका दाहि पलंका लागी।।
  दहि भइ साम नही कालिंदी। बिरहक आगि कठिन अति मंदी।।
  उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ, मरौं दुःख बाँधी।।

अधजर भइउँ, माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काल होइ भूखा।।
माँस खाइ सब हाड़न्ह लागै। अबहुँ आउ, आवत सुनि भागै।।
गिरि, समुद्र, ससि, मेघ रवि, सहि न सकहिं वह आगि।
मुहमद सती सराहिए, जरै जो अस पिउ लागि।। 15।।

- बारहमासा वर्णन – जेठ (ज्येष्ठ)
- 'लंका दाहि पलंका लागी'–लोकोक्ति प्रयोग
- अलंकार–उपमा व रूपक

- तपै लागि अब जेठ असाढ़ी। मोहि पिउ बिनु छाजनि भइ गाढ़ी।।
तन तिनउर भा, झूरौ खरी। भइ बरखा, दुख आगति जरी।।
बंध नाहिं औ कंध न कोई। बात न आव, कहौं का रोई ?।।
साँठि नाठि, जग बात को पूछा ? बिम जिउ फिरै मूँज–तनु छूँछा।।
भई दुहेली टेक बिहूनी। भॉम नाहिं उठि सकै न थूनी।।
बरसै मेघ चुवहिं नैनाहा। छपर छपर होइ रहिं बिनु नाहा।।
कौरौं कहाँ ठाट नव साजा। तुम बिनु कत न छाजनि छाजा।।
अबहूँ मया–दिस्टि कर, नाह नितुर। घर आउ।
मँदिर उजार होत है, नव कै आई बसाउ।। 16।।
  - बारहमासा वर्णन – आषाढ़
  - इस पद में दो संदर्भ हैं नागमती की देह तथा छप्पर का

- रोड़ गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुःख एक एक साँसा।।
तिल तिल बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवैं रूप मुरारी। जासौं पाव सोहाग सुनारी।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। तोला माँसु रही नहीं देहा।।
रकत न राह बिरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोरै घनि हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु, नाथा।
बरस दिवस धनि रोइ कै, हारि परी चित झखि।
मानुष घर घर बूझि कै, बूझै निसरी पखि।। 17।।
  - सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासौं पाव सोहाग गुनारी 11–श्लेष अलंकार (श्लेष शब्द सोन, रूप, सुहाग, सुनारी आदि)

- भई पुछार, लीन्ह बनबासू। बैरिनि सवति दीन्ह चिलबाँसू।।
होइ खर बान बिरह तनु लागा। जौ पिउ आवै उड़हि तौ कागा।।
हारिल भई पंथ मैं सेवा। अब तहँ पठवौ। कौन परवा ?।।
धौरी पंडुक कहु पिउ कठँ लवा। करै मेराव सोइ गौरवा।।
कोइल भई पुकारति रही। महरि पुकारे 'लेइ लेइ दही'।।
पेड़ तिलोरी औ जल हंसा। हिरदय पैठि बिरह कटनंसा।।
जेहि पंखी जाइ जरि, तरिंवर होइ निपात।। 18।।
  - श्लेष अलंकार की सुंदर योजना– पूरे कड़वक में एक अर्थ नागमती की विरह दशा को व्यंजित करता है तो दूसरा अर्थ जायरी के पक्षी–ज्ञान का परिचय देता है।
  - श्लेष के साथ अतिशयोक्ति अलंकार भी है।

- कुहुकि कुहुकि जस कोइल रोई। रकत आँसु घुघुची बन बोई।।
भइ करमुखी नैन तन राती। को सेराव ? बिरहा दुःख ताती।।